

भसाचारस्य EXTRAORDINARY

भाग II—इण्ड 3—उप-इण्ड (i) PART II—Section 3—Sub-section (i) 17.7.8

श्राधिकार से प्रकाशित PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 212] नई दिल्ली, मंगलबार, प्रप्रेल 28, 1987/वंशाल 8, 1909 No. 212] NEW DELHI, TUESDAY, APRIL 28, 1987/VAISAKHA 8, 1909

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या की जाती है जिससे कि यह अलग संकलन को रूप रू रखा जा सके Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

विदेश मंत्रालय

(विधि और संधि प्रभाग)

नई दिल्ली, 22 श्रप्रैल, 1987

प्रधिसूचना

मा. का. नि. 415 (स्र) — प्रत्यर्पण अधिनियम, 1962 (1962 का 34) की द्वितीय अनुसूची के मद 18 द्वारा प्रवत्त शक्तियों का प्रयोग करने हुए केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा निम्नलिखित के संबंध में:--

(क) सरकारी कर्मचारी जानबूझ कर राज्य श्रथवा युद्ध बंदियो को निकलने दें;

- (ख) जिस सरकारी कर्मचारी पर गिरफ्तार करने का दासिस्य हो, उसके द्वारा जानवृक्ष कर गिरफ्तारी न करना ;
- (ग) सजा भोग रहे ब्रथका विधिपूर्वक कारागर में बन्द किये गये किसी व्यक्ति को गिरफ्तार करने का किस सरकारी कर्मचारी पर दायित्व है, उसके द्वारा जानबूझ कर गिरफ्तारी न करना;
- (घ) बंदी बनाए गए व्यक्ति का सरकारी कर्मचारी की लापरवाही रो केंद्र श्रथवा हिरासत से भाग जाना .
- (ङ) किसी व्यक्ति द्वारा भ्रपनी विधिपूर्ण गिरफ्तारी का प्रतिरोध करना अथवा उसमें वाधा उत्पन्न करना ,
- (च) किसी ग्रन्य व्यक्ति की विधिपूर्ण गिरफ्तारी का प्रतिरोध करना ग्रथवा उससे वाधा उत्पन्न करना ,
- (छ) सम्पत्ति उद्दापित करने के लिए, ग्रथवा गैर कान्नी काम करने के लिए मजबूर करने के लिए जानबूझ कर चोट पहुंचाना ;
- (ज) श्रयराध करने की मंगा से जहर ब्रादि के जिए उपहित करना। श्रपराधों को, जिन्हें यदि भारत में किया गया हो तो वे भारतीय दण्ड सहिता की यथास्थित धारा 128, श्रथवा 221 से 225 अथवा 327 श्रथवा 328 के अधीन दण्डनीय होंगे और केन्द्रीय सरकार
- 327 अथवा 328 क अधान दण्डनाय हाग आर कन्द्राय सरकार इन अपराधा को जिन राज्यों के साथ संधियां है, उन्हें छोड़ कर, सभी विदेशी राज्यों के संबंध में और सभी राष्ट्रमण्डल देणों के संबंध में और सभी राष्ट्रमण्डल देणों के संबंध में अर्थ
- के भीतर प्रत्यर्पण स्रयराध विनिदिष्ट करती है।
- 2. यह ऋधिसूचना 22 ऋप्रैल, 1987 को प्रवृत्त होगी।

[सं. एल/413/5/87]

पी. श्रीनिवासा राव, निदेशक

MINISTRY OF EXTERNAL AFFAIRS

(Legal & Treaties Division)

New Delhi, the 22nd April, 1987

NOTIFICATION

G.S.R. 415 (E):—In exercise of the powers conferred by item 18 of the Second Schedule to the Extradition Act, 1962 (34 of 1962), the Central Government hereby specifies the offences relating to—

- (a) public servant voluntarity allowing prisoner of State or war to escape;
- (b) intentional omission to apprehend on the part of public servant bound to apprehend;
- (c) intentional omission to apprehend on the part of public servant bound to apprehend person under sentence—or lawfully committed;
- (d) escape from confinement or custody negligently suffered by public servant;
- (e) resistance or obstruction by a person to his lawful apprehension;
- (f) resistance or obstruction to lawful apprehension of antrain to an illegal act;
- (g) voluntarily causing hurt to extort property, or to constrain to an illegal act;
- (h) causing hurt by means of poison, etc. with intent to commit an offence.
- which if committed in India would be punishable under section 128 or sections 221 to 225 or section 327 or section 328, as the case may be, of the Indian Penal Code to be extradition offences within the meaning of the Extradition Act, 1962 (31 of 1962) in relation to all foreign States other than treaty States and in relation to all Commonwealth countries.
- 2. This notification shall come into force on the 22nd April, 1987.

[No. L|413|5|87]

P. SREENIVASA RAO, Director